ग़ज़ल

फ़िराक़ गोरखपुरी

1896-1982

बहुत पहले से उन क़दमों की आहट जान लेते हैं
तुझे ऐ ज़िंदगी हम दूर से पहचान लेते हैं

मिरी नज़रें भी ऐसे क़ातिलों का जान ओ ईमाँ हैं
निगाहें मिलते ही जो जान और ईमान लेते हैं

तबीअ'त अपनी घबराती है जब सुनसान रातों में
हम ऐसे में तिरी यादों की चादर तान लेते हैं

जिसे सूरत बताते हैं पता देती है सीरत का
इबारत देख कर जिस तरह मा'नी जान लेते हैं

ज़माना वारदात-ए-क़ल्ब सुनने को तरसता है
इसी से तो सर आँखों पर मिरा दीवान लेते हैं

'फ़िराक़' अक्सर बदल कर भेस मिलता है कोई काफ़िर
कभी हम जान लेते हैं कभी पहचान लेते हैं

बहर (बह्र) का नाम :

बहरे हज़ज मुसम्मन सालिम

अरकान

(वो शब्द जिस से शेर की तक़्ती करते हैं) :

मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन

मफ़ाईलुन	मफ़ाईलुन	मफ़ाईलुन	मफ़ाईलुन
1222	1222	1222	1222

रदीफ़ :

लेते हैं

क़ाफ़िया / कवाफ़ी :

जान , पहचान , ईमान , तान , दीवान

- ओबैद आज़म आज़मी

www.azmi.in

27/10/2018